23. डायरी-लेखन

दैनिक बातों या घटनाओं को किसी डायरी में प्रतिदिन कलमबद्ध करना डायरी-लेखन कहलाता है। इसे दैनंदिनी भी कहते हैं। डायरी लिखना बहुत से लोगों की दिनचर्या का एक हिस्सा होता है। शाम के वक्त वे दिनभर की छोटी-बड़ी सभी महत्त्वपूर्ण बातों को डायरी में नोट करते हैं। डायरी-लेखन भी एक कला है। प्रत्येक व्यक्ति डायरी नहीं लिखता क्योंकि इसमें काल्पनिक या बनावटी बातों का कोई स्थान नहीं रहता।

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को डायरी कैसे लिखी जाती है, परिचित करवाएँ।
- ❖ समझाएँ, यह व्यक्तिगत या निजी बातों का विवरण या खज़ाना होती है अतः यह सभी के पढ़ने के लिए नहीं होती।
- ❖ यह भी समझाएँ, किसी की डायरी बिना अनुमति के पढ़ना गलत बात होती है। ऐसा कभी न करें।
- ❖ बताएँ, डायरी लिखते समय दिनांक, स्थान तथा दिन अवश्य लिखना चाहिए।
- ❖ डायरी मन के भावों का पिटारा होती है।
- ❖ पाठ पृष्ठ 168-169 पर दिए हुए डायरी-लेखन के उदाहरण बच्चों से पढ़वाएँ।
- ❖ अभ्यास बच्चों से करने को कहें। समझाएँ, केवल अपने अनुभव लिखें, बनावटी बातें न लिखें।